103 गुनाह और तौबा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान , बहुत रहम वाला है

सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफ़ी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों। मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि पर।

व बअद!

हर इन्सान जब पैदा होता है तो गुनाहों से पाक होता हैं मगर बड़ा हो जाने पर नफ़सानी ख़्वाहिशात, शैतानी बहकावे, ज़ाती कमज़ोरियां और हालात उसे गुनाहगार बना देते हैं। अगर इन्सान सब्र व इस्तेक़ामत से काम ले, अपनी ख़्वाहिशात को लगाम दे, गुनाह हो जाने के बाद अल्लाह से माफ़ी मांग ले तो वह फिर से पाक व साफ़ हो जाता है। गुनाह इन्सान को जन्नत से दूर और जहन्नम के क़रीब कर देता है।

ज़रा सोचिए कि आख़िर वह क्या चीज़ थी जिसने हमारे मां-बाप (आदम व हव्वा अलैहि.) को जन्नत से निकलवाया? किस चीज़ ने इब्लीस को आसमान की बादशाहत से बेदख़ल कराया? रहमत का हक़दार था, क्यों वह लअनत का मुस्तहिक़ बना? जन्नत में था, क्यों दहकती हुई आग उसकी क़िस्मत ठहरी? क्यों नामुरादों व बद बख़्तों की क़यादत उसके हिस्से में आई?

क्यों धरती के लोगों को पानी में ग़र्क़ किया गया? क्यों क़ौमे आद पर ऐसी आंधी आई कि सभी को मार डाला? क्यों क़ौमे समूद पर दिल दहला देने वाली चीख़ का अज़ाब आया? क्यों क़ारून व उसके घर वाले ज़मीन में धंसाए गए? क्यों कुछ लोग बन्दर व सूअर बना दिये गए? ज़ाहिर है जवाब यही होगा कि गुनाह करते रहने की वजह से और गुनाह कहते हैं हर उस काम को जो अल्लाह की नाफ़रमानी से तअल्लुक रखता हो।

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया " जब मेरी उम्मत में गुनाह बढ़ जाएंगे तो अल्लाह उस पर अपना अज़ाब मुसल्लत कर देगा। गुनाहगारों को जो अज़ाब पहुंचेगा वही नेक लोगों को भी पहुंचेगा फिर (मरने के बाद यह नेक लोग) अल्लाह की बख़्शिश व मग़फ़िरत के हक़दार होंगे।" (अहमद-27131) और यह कि "पांच ख़सलतें ऐसी हैं कि अगर तुम उनमें मुब्तिला होगे (तो नुक़सान उठाओगे) और मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ कि तुम उनका शिकार बनो। वो ये हैं -

1. जब किसी क़ौम में ज़िनाकारी खुले आम होने लगे तो उस क़ौम में ताऊन (प्लेग) और दूसरी ऐसी तक़्लीफ़ देह बीमारियां फैल जाएंगी जो उनसे पहले लोगों में नहीं हुई होंगी।
2. जिस क़ौम ने नाप तौल में कमी की, उसे क़हत साली (सूखा) और ज़ालिम हुक्मरानों से वास्ता पड़ेगा।
3. जिस क़ौम ने अपने माल की ज़कात रोकी, उसके लिए आसमान से बारिश रोक ली जाएगी। अगर जानवर न हों तो बारिश की एक बूंद भी न बरसे।
4. जिन लोगों ने अल्लाह से और उसके रसूल सल्ल. से किये हुए वादे को तोड़ दिया तो अल्लाह उन पर बाहर से ऐसा दुश्मन मुसल्लत

कर देगा जो उनके तमाम वसाइल पर कब्ज़ा कर लेगा।

5. जिस कौम के हुक्मरान अल्लाह के अहकाम को नाफिज़ नहीं करेंगे और न अल्लाह के अहकाम पर अमल करेंगे तो अल्लाह उस कौम में ख़ाना जंगी पैदा कर देगा।"
(इब्ने माजा – 4019 , तिबरानी – 1558)

अब सवाल यह है कि "इन्सान गुनाह क्यों करता है? " तो इसकी कई वजूहात हैं –

1. असल वजह तो ईमान की कमज़ोरी है। इसके अलावा
2. अल्लाह की याद से गफ़लत
3. अल्लाह की पकड़ व अजाब से लापरवाही
4. मौत को भूले रहना
5. हिसाब के दिन से बे परवाह होना
6. शैतान का ग़लबा
7. बुरी ख़्वाहिशें और नफ़्स की पैरवी
8. माल व दौलत से अथाह मुहब्बत
9. औरतों का फ़ित्ना
10. अहलो अयाल की मुहब्बत
11. बुरी मजालिस
12. शक वाली चीज़ को अपनाना
13. सब्र व बरदाश्त की कमी और
14. गुनाह करके लज़्ज़त मेहसूस करना।

वह ऐसे कि आप दूसरे की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) सुनना और उसमें शरीक होना इसलिए पसन्द करते हैं क्योंकि आप यह मेहसूस करते है कि मैं उस शख़्स से (जिसकी ग़ीबत की जा रही है) बेहतर व अफ़ज़ल हूं। चोरी में मज़ा इसलिए आता है कि उसके ज़रिये इन्सान को बग़ैर मेहनत के माल मिल जाता हैं, ज़िना इसलिए अच्छा लगता है कि इससे नफ़सानी ख़्वाहिश पूरी होती है। इम्तेहान में नाजाइज ज़राए का इस्तेमाल या नकल करना इसलिए भला लगता है कि इस तरह बिना मेहनत के कामयाबी मिल सकती है। दौलत पाने के लिए ग़ैर कानूनी तरीके अपनाना इसलिए सही लगता है कि इस तरह जल्दी अमीर बना जा सकता है।

इन्सान अगर गौर व फ़िक्र से काम ले तो आसानी से समझ सकता है कि यह वक्ती आजादी जहन्नम की लम्बी क़ैद के मुकाबले में बहुत मामूली चीज है और यह ना जाइज लज्जतें आखिरत में मिलने वाले शदीद अज़ाब की कीमत पर बेहद घाटे का सौदा हैं।
लेकिन इन्सान अक्सर गुनाहों से खुद को होने वाले इन नुक्सानात पर ध्यान नहीं देता –

1. दिल काला व मुर्दा हो जाता है – अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया "जिस्म में एक टुकड़ा ऐसा है कि जब वह सही हो तो सारा जिस्म सही रहता है और जब वह खराब हो जाए तो सारा जिस्म खराब हो जाता है। आगाह रहों वह टुकड़ा दिल है। " (मुस्लिम – 4094, अबुदाऊद– 1330, बुखारी 052)

" जब मोमिन कोई गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक काला धब्बा लग जाता है। अगर वह तौबा कर ले और उस गुनाह को छोड़ दे तो उसका दिल फिर साफ हो जाता है। लेकिन अगर वह गुनाहों में बढ़ता चला जाए तो वह काला धब्बा भी बढ़ता चला जाता है। हत्ता कि उसका सारा दिल ही काला हो जाता है।"(तिर्मिज़ी –3089, सही)

2. इन्सान बेशर्म हो जाता है –

कोई इन्सान जब गुनाहों की दलदल में धंसता चला जाता है तो कभी इतना बेहया भी हो जाता है कि फ़ख्र से अपने गुनाहों का बखान करने लगता है। ऐसे ही बदबख़्तों के बारे में आप सल्ल. ने फरमाया "मेरी उम्मत के हर शख़्स को आफियत मिल जाएगी सिवाए एलानिया गुनाह करने वाले के और खुले आम गुनाह करने की एक शक्ल यह है कि कोई रात के अन्धेरे में गुनाह करे और अल्लाह ने उसे छिपा रखा हो। लेकिन वह खुद यह कहे कि ऐ फ़लां आज रात मैने यह यह गुनाह किये हैं। (बुख़ारी –6069, मुस्लिम–7485)

3. गुनाह से नफ़रत बाकी नहीं रहती –

जबकि होना यह चाहिये "तुम में से जो शख़्स कोई बुराई देखे तो उसे मिटा दे। अगर मिटाने की ताकत नही रखता तो फिर जबान से उसके खिलाफ आवाज उठाए और अगर वह यह भी नही कर सकता तो फिर दिल में उसे बुरा कहे हालांकि यह ईमान का सबसे कम दर्जा है।" (मुस्लिम –177, अबुदाऊद –4340, इब्ने माजा –4013) इसलिए कि " मोमिन अपने गुनाहों को इस तरह देख रहा होता है कि वह किसी पहाड़ के नीचे बैठा है और उसे यह डर रहता है कि यह पहाड़ उस पर गिर न जाए। जबकि गुनाहगार शख़्स अपने गुनाहों को ऐसे लेता है जैसे कोई मक्खी उसकी नाक पर बैठी और उसने हाथ के इशारे से उसे उड़ा दिया। (बुखारी – 6308)

4. शैतान के बताए रास्ते पर चलने लगता है –

जब शैतान किसी पर गालिब आ जाता है तो उसे नेकी की राह पर चलने नहीं देता। इसलिए कि " जो शख़्स रहमान के जिक्र से मुहं मोड़ लेता हैं उसके लिए हम एक शैतान मुकर्रर कर देते हैं। पस वह (गुमराही में) उसका साथी बन जाता है। (जुखरूफ–आयत–36)

5. दुआ कबूल नहीं होती –

"जब कोई शख़्स दुआ के लिए हाथ उठाता है और उसका खाना हराम का, पीना हराम का, लिबास हराम का और हराम ही पर वह पला बढ़ा होता है तो उसकी दुआ कुबुल नहीं होती ।" (मुस्लिम – 2346, तिर्मिज़ी –2989)

6. नेकियां बर्बाद हो जाती हैं –

कुछ गुनाहों की वजह से नेकियां मुतअस्सिर होती हैं। लेकिन शिर्क ऐसा गुनाह है जिसके रहते सारे नेक आमाल ज़ाया व बर्बाद हो जाते हैं। शिर्क अल्लाह को इतना ना पसन्द है कि " अगर अम्बिया अलैहि. भी शिर्क करते तो उनके भी सब आमाल ज़ाया हो जाते।" (अनआम– आयात–88) "शिर्क करने वाले को अल्लाह हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा। ऐसे शख़्स पर जन्नत हराम है और उसका ठिकाना जहन्नम होगा।" (माइदा – आयत– 72)

7. रिज़्क कम व बे बरकत हो जाता है –

"अगर ख़रीद व फ़रोख़्त में झूट बोला जाए या ऐब छिपाया जाए तो उनकी तिजारत की बरकत ख़त्म हो जाएगी।" (बुखारी – 2110, मुस्लिम –3858, अबु दाऊद–3459)

"बेशक ! आदमी अपने गुनाहों की वजह से रिज़्क से महरूम कर दिया जाता है।" (इब्ने माजा – 4022, हसन)

8. अम्न व सुकून छिन जाता है–

इसलिए कि "अल्लाह के ज़िक्र ही से दिल को सुकून मिलता है।" (रअद–आयत–28) और "जो मेरी याद से रू गरदानी करेगा, उसकी जिन्दगी तंगी में गुज़रेगी और हम उसे रोजे कयामत अंधा करके उठाएंगे।" (ताहा–आयत–124)

9. मौत बेहद तक्लीफ से आती है –

"जब किसी मुश्रिक या बहुत गुनाहगार शख्स की मौत का वक्त आता है तो मौत का फरिश्ता उसके पास आकर कहता है ऐ खबीस रूह! अल्लाह की नाराजगी और गुस्से के पास पहुंचो। उसकी रूह इस तरह निकाली जाती है जैसे गोश्त वाली नोकदार सीख़ भीगी ऊन से निकाली जाए। फिर उसे एक गंदे और बदबूदार टाट में लपेट कर सिज्जीन में फैंक दिया जाता है। (अहमद – 18733, सही)

10. नैअमतों का ख़ात्मा –

गुनाहों की वजह से इन्सान अल्लाह की सज़ा की ज़द में आ जाता हैं जैसा कि इर्शादे बारी है – " तुम्हें जो कुछ मुसीबतें पहुंचती है, वह तुम्हारी अपने हाथों की करतूतों का बदला है और अल्लाह तो बहुत सी बातों को माफ़ कर देता है।" (शूरा –आयत– 30)

11. इल्म से महरूमी –

'इल्म' अल्लाह का नूर है जिसे वह दिल व रूह में उतारता है। मगर अल्लाह की नाफरमानी और गुनाह उस नूर को बुझा देते हैं। इमाम मालिक रह. ने अपने शार्गिद इमाम शाफ़ई रह. की ज़हानत, होशमन्दी और समझदारी को देखकर उनसे कहा था " मैं देखता हूं कि अल्लाह ने तुम्हारे दिल पर नूर की रोशन किरनें उतारी हैं। गुनाह की अंधियारी से इसको बुझा न देना।"

इमाम शाफ़ई रह. ने फ़रमाया "जब मैंने अपने उस्ताद इमाम वकीअ रह. से अपने ख़राब हाफ़िज़े की शिकायत की तो उन्होंने फरमाया "गुनाह छोड़ दो और यह जान लो कि इल्म अल्लाह का फ़ज़्ल व करम है जो नादानों को नहीं दिया जाता।" (इन्सान और नेकी, सफ़ा–170)

12. लअनत का मुस्तहिक़ –

लगातार गुनाह करते रहने से इन्सान के दिल पर मुहर लग जाती है और वह गाफिलों में से हो जाता है। इन कुछ गुनाहों की वजह से अल्लाह के रसूल सल्ल. की लअनत में गिरफ्तार हो जाता है जैसे हुस्न के लिए अपने जिस्म को गोदना या गुदवाना, नक़ली बाल जोड़ना या जुड़वाना, खूबसूरती के लिए दातों को बारीक करना या करवाना, सूद खाना, खिलाना या सूदी लेन–देन पर गवाह बनना, शराब पीना पिलाना, बनाना, बनवाना बेचना या खरीदना, लादकर ले जाना या लदवाना, हलाला करना–करवाना या गैरूल्लाह के नाम पर जानवर ज़िब्ह करना, और बिदअत ईजाद करना वगैरह।

गुनाहों से तौबा –

अगर कोई शख़्स गुनाह हो जाने के बाद सच्चे दिल से अल्लाह से माफी मांगे तो दुनिया में ही अल्लाह तआला उसके गुनाहों को माफ कर देता है। अल्लाह से माफी मांगने के इस अमल ही को 'तौबा' कहा जाता है।

"तौबा" का यह मआनी नहीं कि ज़बान तौबा व अस्तग़फार करती रहे और गुनाह भी जारी रहे, यह तो तौबा के साथ मजाक है। इसी तरह किसी डर या लालच की वजह से किसी गुनाह को छोड़ देना भी तौबा नहीं है।

किसी मजबूरी या कमजोरी की वजह से गुनाह से बाज रहना भी तौबा नहीं है। और गुनाह करने की ताकत या कुवत न रखने की वजह से गुनाह से बचना भी तौबा नहीं है। बल्कि तौबा करने वाले को चाहिये कि –

1. अपने गुनाह को फौरन छोड़ दे।

2. पहले हो चुके गुनाहों पर शर्मिन्दा हो।
3. पक्का अहद करले कि अब यह गुनाह नहीं करूंगा।
4. अगर जुल्म से किसी का हक छीना है तो वह हक् मजलूम को वापिस कर दे या उससे माफ़ करवा ले।
5. सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए गुनाह छोड़े।

यह अल्लाह का एहसान है कि उसने हर शख्स के लिए उस वक्त तक तौबा का दरवाजा खुला रखा है जब तक उसकी सांस उखड़ और रूह बदन से जुदा न हो जाए।

इर्शादे बारी तआला है – " जो शख्स तौबा करे, ईमान ले आए और नेक आमाल करे तो अल्लाह ऐसे लोगों के गुनाहों को नेकियों से बदल देगा।" (फ़ुर्कान – आयत–70)
औ यह कि " अल्लाह तौबा करने वालों और पाकीज़ा रहने वालों को पसन्द करता है।" (बक़रह – आयत – 222)

"सारी औलादें आदम ख़ताकार है मगर बेहतरीन खताकार वह है जो तौबा करता है।" (इब्ने माजा –4251, तिर्मिजी – 2292) और यह कि

1. " जब कोई बन्दा यह कहता है कि ऐ अल्लाह मेरे गुनाह माफ कर दे। तो अल्लाह बहुत खुश होता है।" (अबु दाऊद –2599)

2. "अल्लाह तआला बन्दे की तौबा से इससे भी ज़्यादा खुश होता है, जितना कोई अपना खोया हुआ ऊँट पाकर होता है।"(तिर्मिजी – 3277, हसन)

3. "ऐ आदम के बेटे। अगर तू जमीन व आसमान भर के गुनाह ले कर मेरे पास आए। मगर शिर्क न किया हो तो उतनी ही मगफिरत के साथ मैं तुझसे मिलूंगा।" (तिर्मिजी – 3279, हसन)

3. "अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह एक और मखलूक पैदा कर दे कि वह गुनाह करे (फिर तौबा करे) तो अल्लाह उनके गुनाह माफ कर दे।" (तिर्मिजी – 3278, हसन)

तौबा में रूकावटें –

अफ़सोस! इन्सान इस अजीम नुस्खे को इस्तेमाल नहीं करता। उसकी यह कुछ वजुहात हैं –

1. लम्बी उम्र का धोखा – इन्सान अक्सर इस धोखे में रहता है कि अभी मेरी उम्र काफी है। जब बुढ़ापे में पहूंचूगा तब तौबा करके इन गुनाहों को छोड़ दूगां। हालांकि कोई शख्स नहीं जानता कि उसकी उम्र कितनी है? कब, कहां और कैसे उसे मौत आएगी?
2. पक्की तौबा का धोखा – कुछ लोग गुनाह पर गुनाह यह सोच कर किये चले जाते है कि फलां वक्त या फलां मौके पर या फला काम हो जाने के बाद मैं पक्की तौबा कर लूंगा। क्योंकि मैंने अभी अगर तौबा कर भी ली तो वह पक्की तौबा नहीं होगी।
3. मगफ़िरते इलाही का गलत ख़्याल – इसमें कोई शक नही कि अल्लाह एक मां से भी 70 गुना ज्यादा अपने बन्दों के लिए रहम दिल है। मगर इसका यह मतलब नहीं है कि हम जो चाहें करते रहे। वह हमारे हर गुनाह को खुशी से माफ कर देगा। कुछ लोग इसी धोखे का शिकार होकर एलानिया गुनाह भी करते हैं और बड़ी ढिढ़ाई से यह भी कहते हैं कि अगर अल्लाह ने हमें जन्नत नहीं देनी तो फिर किसे देनी है? अगर वह हम पर रहम नहीं करेगा तो किस पर रहम करेगा? इस ख्याल के लोग यह जान लें कि अल्लाह उन लोगों के लिए गफूर व रहीम है जो शिर्क नहीं करते और थोड़े बहुत नेक अमल भी करते हैं

और अपने गुनाहों की माफी भी मांगते रहते हैं।

4. आख़िरत की सज़ा को मामूली समझना –

कुछ लोग यह सोच कर तौबा नहीं करते कि मरने के बाद देखा जाएगा। इस जिन्दगी का मज़ा क्यों खराब करें। अगर वहां सजा मिली भी तो कुछ अर्से बाद फिर जन्नत में चले जाएगे। वोह यह नहीं सोचते कि इस दुनिया की आग में तो कुछ लम्हों के लिए अपने हाथ रखना हमें गवारा नही। फिर इससे 70 गुना ज़्यादा शदीद आग में जलना कैसे बरदाश्त कर पाएगें?

5. गुनाह को मामूली समझना –

कुछ लोग इसलिए तौबा नहीं करते कि वह समझते है कि हमसे हुआ यह गुनाह मामूली है । हालांकि अल्लाह की नाफरमानी में किया जाने वाला कोई अमल मामूली नहीं होता।

6. फिक्रे आखिरत से गफ़लत –

कोई इसलिए तौबा नहीं करता कि वह इस बात से बेपरवाह होता है कि मरने के बाद उसे अपने हर छोटे बड़े व अच्छे और बुरे अमल का हिसाब देना हैं बस वह गुनाह किये जाता है और बिना तौबा किये ही मर जाता है।

7. शफाअत का गलत अक़ीदा – कुछ लोग यह समझते है कि हमारे फलां वली और बुजुर्ग अल्लाह से हमारी सिफारिश करके हमें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे। हालांकि क़ब्र में कोई सिफारिशी नहीं होगा और रोज़े महशर भी हर शख़्स को अपने अपने आमाल का हिसाब देना होगा। फिर वहां सिफारिश भी वह कर सकेगा जिसे अल्लाह इजाजत देगा और सिफारिश भी उसकी होगी जिसके लिए अल्लाह चाहेगा।

8. ना उम्मीदी – अगर गुनाहों में लतपथ इन्सान तौबा करना भी चाहे तो शैतान उसे कहता है तुम तो बहुत बड़े गुनाहगार हो तुम्हारी तो तौबा ही कुबूल नहीं होगी। हालांकि कोई शख्स अगर सच्ची तौबा करे तो उसे माफी जरूर मिलती है ख्वाह उसके गुनाह समन्दर के झाग के बराबर ही क्यों न हों।

9. ख़्वाहिशात की पैरवी – कोई अपनी दिली ख्वाहिशात को पूरा करने के लिए नाजाइज व हराम तरीके से भी परहेज नही करता और ख्वाहिशात की अन्धी तक़लीद उसे तौबा नहीं करने देती।

10. गलत माहौल व बुरे दोस्त – कोई तौबा का इरादा कर भी ले तो गलत माहौल व बुरे दोस्त उसकी तौबा में रूकावट बन जाते हैं।

11. तक़दीर का बहाना – कोई कहता है मेरी तकदीर में गुनाह करना ही लिखा था। ऐसा शख्स यह भूल जाता है कि तक़दीर में तो रिज़्क और मौत का वक़्त भी लिखा है फिर क्यों कमाई के लिए जद्दो जहद करता है और क्यों बीमार होने पर दवा लेता है।

अल्लाह से दुआ है कि तौबा में हाइल इन रूकावटों पर काबू पाने में हमारी मदद करे । गुनाहों से बचने, नेक अमल करने और सच्ची तौबा करने की तौफीक दे और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। आमीन।

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

9214836639, 9887239349